Role of Pressure groups in the British Political Process

विश्व का कोई भी देश ऐसा नहीं है, जिसका राजनीतिक क्रिया-कलाप दबाव समूहों से स्वतंत्र हो। कोई भी समूह जो सरकार से कुछ सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए अथवा ऐसे कानूनों को न करने के लिए जो उस समुदाय विशेष की हितों के विरुद्ध हो, सरकार पर दबाव डालते है, दबाव समूह कहलाते है। ओडिगार्ड के अनुसार, "दबाव समूह ऐसे लोगों का औपचारिक संगठन है जिसके एक अथवा अधिक सामान्य उद्देश्य या स्वार्थ होते है और जो घटनाओं के क्रम को विशेष रूप से सार्वजनिक नीति के निर्माण और शासन को इसलिए प्रभावित करने का प्रयत्न करते है कि वे अपने हितों की रक्षा एवं वृद्धि कर सके।

इस प्रकार दबाव समूहों के प्रमुख लक्षण इस प्रकार है- (i) दबाव समूह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए नीति निर्माताओं को प्रभावित करते है। (ii) दबाव समूहों का सरोकार विशिष्ट मामलों में होता है। (iii) ये राजनीतिक संगठन नहीं होते और न ही ये चुनाव में भाग लेते है। (iv) दबाव समूहों को अज्ञात साम्राज्य कहा गया है। जब उनके हित खतरे में होते हैं तो वे सक्रिय हो जाते है।

अन्य देशों की भाँति, ब्रिटेन में भी दबाव समूह सक्रिय है। लेकिन अमरिकी दबाव समूहों से इसकी तुलना कम है। ब्रिटिश दबाव समूह इस में अन्दर ही सक्रिय प्रभाव डालते है। अनुदार दल और मजदूर दल दोनों के ही कोई न कोई गुट का सम्बन्ध रहता है। जैसे- श्रमिक संघ आमतौर पर मजदूर दल के तो कृषक संघ अनुदार दल के।

Scanned with CamScanner

ब्रिटिश राजनीतिक व्यवस्था में पाये जानेवाले गुटों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम वैसे गुट जो समस्त हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं और दूसरा जो सार्वजनिक हितों की अभिवृद्धि का प्रयत्न करते हैं।

ब्रिटिश राजनीति में समस्त हितों का प्रतिनिधित्व करनेवाले गुट वे हैं जो विशिष्ट वर्गों के हितों के संरक्षण करते हैं। जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित समूह आते हैं- (1) व्यापारिक समूह - ब्रिटिश राजनीति में कई ~~की~~ प्रभावशाली समूह हैं, जो अपने हितों के संरक्षण का प्रयत्न करते हैं और इस हेतु सांसदों से सहयोग लेता है। व्यापारिक समूह के अन्तर्गत निम्नलिखित समूह आते हैं - Institute of Directors, Confederation of British Industries (2) श्रमिक संगठन - ब्रिटेन में कई श्रमिक संगठन हैं जो राजनीतिक दृष्टि से काफी शक्तिशाली हैं - National Union of Railway Workers, National Union of Mine Workers etc. ये संगठन लगभग सभी प्रमुख दलों में सदस्यों को चुनाव में सहायता ~~कर~~ प्रदान करती हैं और उसके माध्यम से लोकसदन में अपनी माँग उठाती हैं।

दूसरी ओर सार्वजनिक हितों की अभिवृद्धि करने वाले वैसे भी गुट हैं जो कुछ विशिष्ट आदर्शों, या मूल्यों या हितों में निष्ठा रखते हैं और उनकी पूर्ति के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं। इनमें प्रमुख हैं - Council for Advancement of State Education, Council for the Preservation of Rural England etc.

ब्रिटिश दबाव समूह प्रायः प्रशासनिक विभागों और समितियों के माध्यम से काम

करते हैं। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि व्यवहार में ब्रिटिश मंत्रिपरिषद् कानून को अंतिम रूप देने से पहले ही संगठित प्रभावक गुटों से परामर्श कर लेती है। जैसे मजदूर दल की सरकार ने कोयले की खदानों, वायुमार्गों, रेलमार्गों आदि का राष्ट्रीयकरण करने से पहले ही सम्बन्धित हितों से परामर्श कर लिया था। यदि कानून पारित हो भी जाता है तो दबाव समूह उसे अपने हितों में मोड़ने का प्रयास प्रारम्भ करते हैं।

स्पष्ट है कि ब्रिटिश राजनीतिक प्रक्रिया में दबाव समूहों को मान्यता दी जाती है और वे शासन के अंग के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। केन्द्रीयकरण के कारण ब्रिटेन में सारी नीतियाँ मंत्रिमंडल द्वारा निर्धारित की जाती है और दबाव समूह मंत्रिमंडल को ही प्रभावित करते हैं और उसे अपना लिखित ज्ञापन प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार ब्रिटिश दबाव समूह की सफलता के सम्बन्ध में S.A. Walkland ने ठीक ही कहा है, " The basic characteriastic of British pressure groups is that they exert pressure on the policy framing cogs of governmental machinery rather than on its implementing agencies".

Scanned with CamScanner